अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अप्रेल-2022

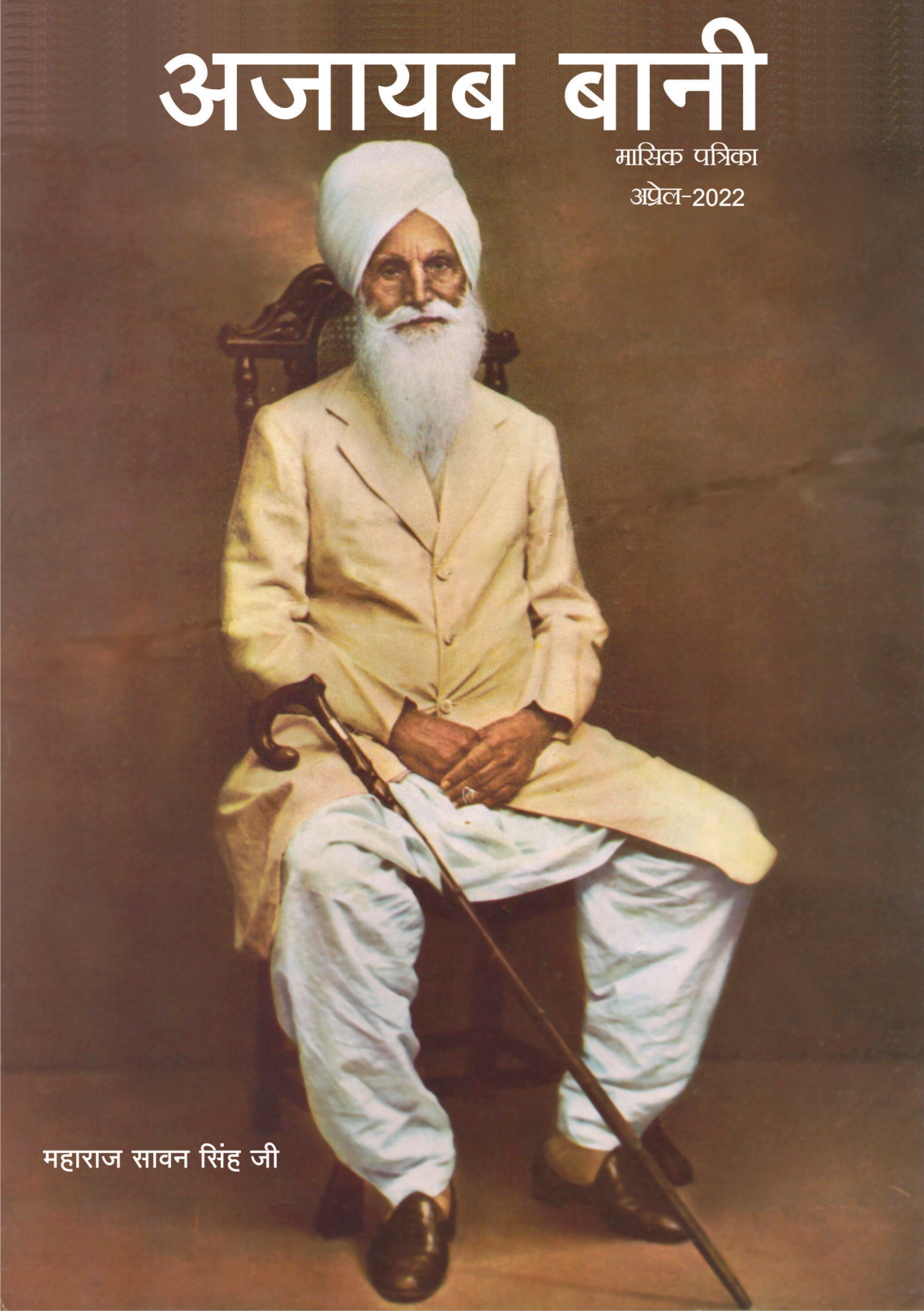

महाराज सावन सिंह जी

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां | अंक–बारहवां | अप्रेल–2022

नाम की मिठास
(बाबा सावन सिंह जी के मुखारविन्द से) 3

गम दुनिया दे हैंन बथेरे
(शब्द) 6

सतगुरु की सेवा
(सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज) 7

सवाल-जवाब
(परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब) 23

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना, डॉ सुखराम सिंह, परमजीत सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 241 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सावन-सावन पई ढुडेंदी

सावन–सावन पई ढुडेंदी, सावन दिल विच वसदा
सावन मेरा दिलबर जानी, हर साह दे विच वसदा x 2

1 कदी उदासी छा जांदी है, कदे पैर ना धरती लग दा
रमज सावन दी, समझ ना आवे, पता लगे ना रग दा x 2
सावन–सावन पई.....

2 हौंके हावियां विच जिंद सुक्की, ते होई फिरां सुदाई
दिल दा महरम किते ना दिस्सया, जद झात अंदर मैं पाई x 2
सावन–सावन पई.....

3 दर्श प्यासी वे मैं सावन, इक वारी दर्श दिखा दे
तूं ते मैं इक हो जाईऐ, 'अजायब' दी प्यास बुझा दे x 2
सावन–सावन पई.....

बाबा सावन सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

नाम की मिठास

बच्चे को खेलने का शौंक है, वह स्कूल जाने से कतराता है। बच्चे के माता–पिता चाहते हैं कि बच्चा स्कूल जाकर अध्यापकों से पढ़े लेकिन बच्चे को पढ़ाई का महत्त्व नहीं पता। बच्चे को खेलकर खुशी मिलती है, कभी–कभी खेलते हुए उसे चोट भी लग जाती है लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। माता–पिता बच्चे को लालच देते हैं और अध्यापक को सहयोग देकर अध्यापक का कार्य आसान बनाते हैं। बच्चा धीरे–धीरे पढ़ाई का महत्त्व समझने लगता है और फिर खेल और पढ़ाई दोनों का आनन्द उठाता है। एक समय आने पर वह विद्वान और खिलाड़ी भी बन जाता है।

इसी तरह जब आत्मा सन्तमत में प्रवेश लेती है तब गुरु चाहता है कि आत्मा दसवें द्वार में पहुँचकर अंदर जाए और नाम के साथ जुड़े लेकिन शरीर नौं द्वारों में मस्त है। उस समय जीव के साथ होने वाली दुर्घटनाएं उसे खेल का हिस्सा लगते हैं क्योंकि वह नाम का महत्त्व नहीं जानता।

गुरु उसे सतसंग में नाम की महिमा के बारे में बताकर अंदर ले जाने के लिए प्रेरित करते हैं। उसके लिए यह काम मुश्किल है क्योंकि उसे माता–पिता से कोई सहयोग नहीं मिलता। नाम से जुड़ना तो बहुत दूर की बात है लेकिन काल नहीं चाहता कि आत्मा दसवें द्वार को पार करके तीसरे तिल पर पहुँचे। काल उसकी बुद्धि को भटकाने के लिए चिन्ताएं, बिमारियाँ और मुसीबतें पैदा करता है क्योंकि काल का काम आत्मा को नाम से दूर रखना है।

धीरे–धीरे आत्मा गुरु को सच्चा दाता मान लेती है फिर नौं द्वारों में से निकलकर नाम से जुड़ने के लिए दसवें द्वार की ओर बढ़ती है फिर उसके

लिए अंदर जाना आसान हो जाता है और दसवें द्वार पर उसे खुशी मिलने लगती है जिसकी तुलना में दुनिया की सब मौज–मस्तियाँ बेकार लगती हैं।

शुरुआत में तरक्की धीरे–धीरे होती है। दुनियावी मौज–मस्तियों को छोड़ना, इन्द्रियों को नियंत्रित करके मन को काबू करके ध्यान को केन्द्रित करना आसान काम नहीं। लेकिन प्यार और विश्वास से क्या हासिल नहीं किया जा सकता। कामयाबी जरूर मिलेगी।

हमेशा याद रखें, एक बार नाम का बीज बो दिया तो वह पेड़ जरूर बनेगा और उस पर फल भी जरुर लगेंगे। ब्रह्मांड का नाश हो सकता है लेकिन नाम के बीज का नाश नहीं हो सकता। नाम से बढ़कर कोई भी चीज कीमती नहीं। **नाम की मिठास**–शब्द धुन बेमिसाल है और समझ से बाहर है। नाम आपके अंदर है, आपके लिए है और आपकी पहुँच में है।

अगर आप हिम्मत करके अपना काम जारी रखते हैं तो आपको सब कुछ मिल जाएगा। मन स्वादिष्ट चीजों के पीछे भागता है और इच्छाओं को पूरा करने में ही संतुष्टि ढूंढता है लेकिन कोई भी इच्छा उसे लम्बे समय तक संतुष्ट नहीं करती। कुछ समय बाद हमने जो कुछ प्राप्त किया होता है उसे छोड़कर नये सुखों के पीछे भागने लगते हैं इसलिए मन कभी संतुष्ट नहीं होता, हमेशा भूखा ही रहता है।

मन को सहँसदल कमल में ले जाना ही इसका उपाय है। सहँसदल कमल के अमृत को काम, क्रोध और माया चुरा रहे हैं, जब आप मन को सहँसदल कमल में ले जाएंगे तो आपका मन अमृत पिएगा और हमेशा के लिए संतुष्ट हो जाएगा क्योंकि अमृत सबसे मीठी चीज है। फिर सारी इच्छाएं खत्म हो जाएंगी, मन शान्त हो जाएगा और एक वफादार सेवक की तरह आपका साथ देगा।

सहँसदल कमल पर पहुँचने से पहले अगर आप आँखों के केन्द्र बिन्दु पर ध्यान टिका लेते हैं, सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार कर लेते हैं तो आप

गुरु से मिल लेंगे, गुरु हमेशा आपके साथ रहेगा। आप जब चाहे गुरु से बात कर सकते हैं और गुरु को देख भी सकते हैं। आपका कमरा बंद भी हो तो भी गुरु आपके साथ होगा। जब वह स्वरूप आपके साथ होगा तो बाहरी स्वरूप के पास होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

परमात्मा न्याय करता है, बीमार के साथ जो भी होता है उसके कर्मों के हिसाब से होता है। आपको चिन्ता नहीं बल्कि ईलाज में बीमार की सेवा और मदद करनी चाहिए, चिन्ता आपकी पावर को कमजोर कर देती है।

जो भी हो रहा है आपके भले के लिए हो रहा है, ताकि आप दुनियावी मोह माया से आजाद हो जाएं, सतगुरु और नाम के साथ जुड़ जाएं। सतगुरु के बिना कोई नाम के साथ नहीं जुड़ सकता और नाम के बिना अपने असली घर जाने का कोई और रास्ता नहीं है।

इस दुनिया का कोई दोस्त–रिश्तेदार हमारे साथ नहीं जाएगा, यहाँ तक कि हमारा शरीर भी मौत के बाद हमारा साथ छोड़ देगा। जिन्होंने हमारे साथ नहीं जाना उनकी क्या चिंता करनी है? आपकी घबराहट और चिंताएं आपको नीचे धकेल रही हैं। ध्यान करने से आत्मा ऊपर उठती है और वह वहाँ कुछ देखकर खुश हो जाती है, जब नीचे गिरती है तो कोई दृश्य नहीं दिखता तब आप निराश हो जाते हैं।

आप ध्यान पर जोर दें, जब ध्यान का कोर्स पूरा हो जाएगा, फैली हुई शक्तियाँ अंदर चली जाएंगी तो शब्द धुन इतनी तेज होगी कि आप उसे सहन नहीं कर सकेंगे। शब्द–धुन ऊपर बज रही है और आप नीचे बैठे हैं इसलिए आपको उसकी आवाज सुनाई नहीं दे रही। जब आपका ध्यान केन्द्र बिन्दु पर होगा तो आपको विश्वास आएगा और आप मजबूत बनेंगे। मेहनत के सिवाय कोई तरीका नहीं। बहुत सी नकारात्मक शक्तियों में से काल एक है, आपको उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

***

गम दुनियां दे हैंन बथेरे

गम दुनिया दे, हैंन बथेरे, केहड़ा इश्के दा, रोग सहेड़े x 2

1 *हिज़र हनेरा, आस डगोरी x 3 राह बसलां दे, अत्त लमेरे x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

2 *मंजिल चुम्मे, पैर ओन्हां दे x 3 दरिया सिदकां दा, तरदे जेहड़े x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

3 *कायर समझण, दूर दुराडे x 3 मंजिल वसदी, हिम्मत नेड़े x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

4 *हर इक रोवे, गौं अपणे नूं x 3 कौंण किसे लई, हंजू केरे x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

5 *आस वी फिरदी, बौरी होई x 3 सुन्ने सखणें, दिल दे वेहड़े x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

6 *सिदक जिन्हां दी, हड्डी रचया x 3 कौंण ओन्हां दा, साथ नखेड़े x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

7 *प्रीत मधानी, दिल दी चाटी x 3 इश्क ना जापे, मक्खण पेड़े x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

8 *गल्ल सावन दी, आ कोई करिऐ x 3 मुका दईऐ हुण, सारे झेड़े x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

9 *'अजायब' नाम दा, बलदा दीवा x 3 होर हनेरा, चार चुफेरे x 2*
केहड़ा इश्के दा.....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

12 जनवरी 1997

गुरु अमरदेव जी की बानी

सतगुरु की सेवा

ऑडियो– 294

मुम्बई

परमपिता परमात्मा के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया अपना यश और भक्ति करने का मौका दिया। मैंने कल बताया था कि शिष्य के अंदर गुरु ही प्यार पैदा करता है। जिस तरह बच्चे के अंदर माता प्यार पैदा करती है उसी तरह गुरु भी शिष्य के अंदर नाम का बीज बोता है, प्यार और तड़फ का बीज बोता है। जिस तरह अध्यापक की अपनी ड्यूटी है और विद्यार्थी की अपनी ड्यूटी है उसी तरह जो विद्यार्थी अध्यापक के कहे अनुसार चलता है वह कामयाब हो जाता है। जो शिष्य गुरु की हिदायत का पालन करता है वह भी कामयाब हो जाता है।

आपने अभी जो शब्द सुना है यह खास समझने वाला है। यह भी एक आशिक और माशूक का मिलाप है। **सतगुरु की सेवा**, सतगुरु की भक्ति कोई खाला जी का बाड़ा नहीं। इस शब्द में बताया गया हैः

हर इक रोवे गौं अपणे नूं, इश्क न जापे मक्खण पेड़े

शिष्य रोता है क्योंकि उसका प्यारा शरीर करके उससे बिछड़ा होता है। मैं हमेशा ही बताया करता हूँः

मैंनू दुःख आशिकी दा, केहा दुःख आशकां दा
आशिकां दे ताईं अग्गे आखया पुकार के
आशिकी बगैर गीत गाईदे नही आशिकां दे
ते सब बैठ जावंदे ने चुप मन मार के
इश्क चतर चतुराई नाल रोवंदे ने
सब कोई आपदे सुणावें दुख अजायब सिंह
किसे नू की खास दुख कहे संसार के

आज तक जितने भी परम सन्त हुए हैं उन्होंने अपने गुरु के साथ वह आशिकी की जो दुनिया में चमकती है, जिसकी आज तक मिसाल बनी हुई है। आप उसे प्यार कह लें या आशिकी कह लें। मैं हमेशा ही आपके आगे उन आशिकों की बानी रखता हूँ जो परमात्मा के चुनाव में आईं। अगर खुद आशिक न हों तो आशिकी के गीत कौन गाएगा? पंजाबी की एक मशहूर कहावत हैः

अग्ग फोलके धुएं दे पज रोवां, ते मित्रां दे दर्द बुरे

जिसके अंदर गुरु का दर्द है वह भी बहाने से आहें भरता है। सारे अपना ही दुख सुनाते हैं, कौन किसके लिए आँसू बहाता है? मुझे परमात्मा सावन के चरणों में बैठने का मौका मिला है, मुझे उस नजारे का पता है कि उनके अंदर अपने गुरु के लिए कितना दर्द था। वे कहते थे, ''अगर मेरा गुरु बाहरी तौर पर एक सैंकिड के लिए भी अपनी झलक दिखा दे तो मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ।''

यहाँ बहुत से प्रेमी बैठे हैं जिन्होंने महाराज कृपाल को देखा है। जब सच्चे पातशाह सावन का नाम उनके होठों पर आता तो उनकी आँखों से आँसू बहने लगते थे, वे अपने गुरु के आशिक थे।

आज आपके आगे गुरु अमरदेव जी का शब्द रखा जा रहा है। हम अनेकों बार उनकी बानी पढ़ते और सुनते हैं कि उन्होंने परमात्मा की खोज में बहुत लम्बी–लम्बी यात्राएं की, कई तीर्थों पर गए कि कोई साधु–सन्त मिले जो मेरी आत्मा को ठंड पहुँचाए।

सिंघो के लेहंडे नहीं हंसो की नहीं पात
लालों की नहीं बोरियां ते साध न चले जमात

मैं देखता रहा हूँ कि आज से पचास साल पहले साधु जमातें बनाकर चलते थे कि यह फलाने साधु की मंडली है क्योंकि पहले नकलें बनाई हुई थी इसलिए लोग तीर्थों पर फिरते थे कि आज वहाँ की अमावस है, आज

कुंभ है। जिन लोगों के दिल के अंदर तलाश होती थी वे तीर्थों पर जाते थे, आज भी लोग खोज करते फिरते हैं।

गुरु अमरदेव जी ने भी बहुत लम्बी–लम्बी यात्राएं की, बहुत पंडितों और विद्वानों से मिले आखिर उनका मिलाप एक ब्रह्मचारी के साथ हुआ। उस समय आप बुजुर्ग हो चुके थे। अभी ब्रह्मचारी की मंजिल बाकी थी उनका घर पहले आ गया, ब्रह्मचारी रात को उनके घर रूका, बातचीत हुई। ब्रह्मचारी ने कहा, ''यार अमर, तू गुरु की कोई बात सुना।'' गुरु अमरदेव जी ने कभी गंगा मईया को गुरु कहा, कभी किसी तीर्थ को गुरु कहा लेकिन ब्रह्मचारी ने खंडन किया कि पानी या पत्थर के देवता गुरु नहीं होते, गुरु जीता जागता होता है।

गुरु अमरदेव जी ने कहा कि मुझे तो ऐसा कोई गुरु मिला ही नहीं। ब्रह्मचारी रोकर कहने लगा मुझे अफसोस है कि मैंने तेरी संगत की, तेरे घर का खाना खाया क्योंकि तू तो निगुरा है। अगर कोई छोटा बच्चा होता तो मैं उसे कुछ कहता, तू बहत्तर साल का होकर अभी भी निगुरा है। गुरु अमरदेव जी की सारी रात रोते हुए निकल गई, सुबह ब्रह्मचारी चला गया। हमें पता नहीं किस समय हमारे दिल को ठोकर लग जाएगी।

बीबी अमरो रिश्ते में आपके भाई की पुत्रवधू थी, उसने सुबह गुरबानी बोली। आपको पता है कि गुरबानी में गुरु की महिमा, संगत की महिमा और नाम की महिमा है। गुरु अमरदेव जी ने उससे पूछा, ''बेटी, आजकल ऐसे कोई गुरु हैं?'' बीबी अमरो ने बताया कि इस तरह के सारे गुण आपके समधी में हैं, वह गुरु नानकदेव जी की गद्दी पर प्रचार करते हैं। अमरदेव जी ने उससे कहा कि तू मुझे उनके पास लेकर चल। बीबी अमरो ने कहा कि मेरा यह कायदा है जब तक मेरे पिता जी मुझे नहीं बुलाते, मैं कभी मायके नहीं गई। अमरदेव जी ने कहा, ''अगर कोई सजा मिलेगी तो मैं वह सजा भुगत लूँगा लेकिन तू मुझे उनके पास लेकर चल।''

अमरदेव जी गुरु अंगददेव जी के पास ऐसे गए कि फिर मुड़कर वापिस नहीं आए, यह इश्क ही था। लोगों ने बहुत ताने–मेहणे दिए। जिस तरह धनवानों के पीछे शुरु से ही चोर लगे रहते हैं उसी तरह मालिक के प्यारों के पीछे भी निंदक सदा शोर करते रहते हैं।

ज्यों धनवाना पिच्छे मुढ तो लग्गे चोर रहे
त्यों सन्तजना दे पिच्छे निंदक पौंदे शोर रहे

दुनिया कहाँ मौका हाथ से जाने देती है। बेटों ने इसे घर से निकाल दिया है और अब यह समधी के घर ठोकरें खा रहा है। गुरु अंगददेव जी ने अमरदेव जी को सेवा में लगा लिया, **सतगुरु के घर में तो सेवा ही होती है।** अमरदेव जी ने गुरु के दरबार में बहुत सख्त सेवा की, पानी भरा, खेती का काम किया, गुरु घर से जो रूखा–सूखा मिल जाता उसे खा लेते और जो फटा–पुराना कपड़ा मिल जाता उसे प्रसादी समझकर पहन लेते। लोग बहुत ही ताने–मेहणे देते रहे कि ये बुढ़ापे में इतनी मेहनत कर रहे हैं। आपके अंदर गुरु का इश्क पैदा हो गया था। आप भजन में पढ़ते हैंः

तू अमर गुरु वांगू कर सेवा, इस रूख नू लगदा फेर मेवा

जब भाई लैहणा गुरु नानकदेव जी से मिला उस समय गुरु नानकदेव जी खेत में से लदीन निकाल रहे थे। गुरु नानकदेव जी ने लदीन की टोकरी भाई लैहणा को उठवा दी। भाई लैहणा ने सुच्चा चोगा पहना हुआ था टोकरी में से कीचड़ उनके ऊपर गिरता रहा। गुरु नानकदेव जी की पत्नी ने कहा, ''आप बंदे की तरफ भी नहीं देखते इस बेचारे ने सुच्चा चोगा पहना हुआ था, यह सेवा आप किसी और से भी करवा सकते थे।''

अगर घर के लोगों को गुरु नानकदेव जी पर ऐतबार होता तो रोना किस बात का था? गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''यह टोकरी इसके ही उठाने के लिए थी, तू इससे तो पूछ क्या यह नाराज है?'' लैहणा ने उस कीचड़ को केसर समझा। लैहणा सदा ही गुरु नानकदेव जी के साथ खेती में हाथ बँटवाते रहे। यह सारा प्रेम है इसे प्रेम या इश्क कुछ भी कह लें।

तू देख ले सजणा लैहणे वल्ल, उस राह ते सजणा तू भी चल।

यह शब्द बहुत विचारने वाला है। पप्पू ने कल इस शब्द की ट्रांस्लेशन की तो उसे थोड़ी सी मुश्किल आई। मैंने पप्पू से कहा तू मुझसे बैठकर पूछ ले मैं बता देता हूँ क्योंकि इसमें उर्दू के लफ्ज ज्यादा हैं। पहले मेरी मादरी जुबान (मातृभाषा) उर्दू ही थी। आर्मी में कोई पंजाबी या हिन्दी नहीं बोल सकता था। मैं जब आर्मी से आया तो पंजाब में मेरा ग्रामीण जीवन हो गया। गाँव में अगर उर्दू बोलें तो वहाँ के लोग नकल उतारते, मैंने अपनी बोली ऐसी बदली कि अब मैं न उर्दू बोल सकता हूँ, न हिन्दी बोल सकता हूँ और मैं बीच में ही लटक गया। जब अंदर भजन की कोई कल्पना उठती है तो उस समय मेरी जुबान पर आमतौर पर उर्दू के लफ्ज आ जाते हैं। मंजिल उनके पैर चूमती है जिनमें हिम्मत है।

आर्मी में मुझे हुक्म मानने और अनुशासन में रहने का बहुत मौका मिला। उसका मुझे यह फायदा हुआ कि जब परमात्मा कृपाल मेरे घर आए तो उन्होंने मुझे जो हुक्म दिया, मैं उसे मान सका क्योंकि मुझे पहले से ही हुक्म मानने की आदत पड़ी हुई थी। आर्मी में यह कानून होता है अगर खाना बनाने का हुक्म मिला है तो यह पूछने की जरूरत नहीं कि आटा कहाँ से मिलेगा, दाल कहाँ से मिलेगी, अग्नि कहाँ से आएगी, पानी कहाँ से आएगा? पहले खाना तैयार करें सवाल बाद में करें।

अनुशासन में रहना भी मैंने आर्मी में सीखा। हमें बताया गया कि गन को चलाने के लिए टारगेट, गन, बदन तीनों एक ही लाईन में हों। यह सन्तमत से मेल खाता है। टारगेट के बीच में गुलजरी होती है उसके बीच में आप अपना निशान जोड़कर साँस को एक सैकिंड के लिए रोकें तो आपका निशाना सही लगेगा।

आप देखें, तीर तो मछली की आँख पर औरों ने भी लगाए थे लेकिन अर्जुन इसलिए कामयाब हुआ क्योंकि उसमें एकाग्रता थी। उसने तेल में

देखते हुए घूमती हुई मछली की आँख में तीर मारा। आर्मी में ऐसी प्रैक्टिस करवाई जाती है, उस पर ईनाम भी रखा जाता है। कबीर साहब कहते हैंः

तन थिर मन थिर सुरत निरत थिर होए

हमारी बैठक ठीक होनी चाहिए। हमनें पहले अपने खाने–पीने, बोलने और उठने–बैठने का अनुशासन ठीक करना है। आप ऐसी बैठक में बैठें कि आपका शरीर स्थिर हो, आपको जितनी देर बैठना है आप बिना हिले बैठ सकें। फिर आपको जो पाँच पवित्र नाम दिए गए हैं उन्हें दोहराएं और मन को समझाएं कि तुझे यह काम दिया है। मन टिका होगा तभी सिमरन कर सकेंगे। सुनने वाली शक्ति को सुरत कहते हैं और देखने वाली शक्ति को निरत कहते हैं, ये भी एकाग्र हों। गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा थाः

एक पल जो एक क्षण ध्यावे काल फाँस के बीच न आवे

अगर आप एक सैकिंड के लिए भी इस तरह स्थिर हो जाएं तो आप देखें उस एक सैकिंड का क्या बनता है?

यह प्यार ही था कि गुरु अमरदेव जी ने बहुत मेहनत की, आप यह नहीं कहते थे कि मैंने **सतगुरु की सेवा** की। सन्त अगर किसी को दो दिन सेवा करने के लिए कह देते हैं तो जो गुरु घर में सेवा करता है प्रेमी लोग उसे मान भी दे देते हैं। उसने इतनी सेवा नहीं की होती लेकिन हम उसके पैरों को हाथ लगाकर उसे लूट लेते हैं और उसके पल्ले में हौमें–अहंकार ही रह जाता है कि पता नहीं मैं क्या हूँ? जो ये मुझे इतनी नमस्कार करते हैं। जब हम अंदर जाते हैं तो पता लगता है कि हमने गुरु की कृपा से सेवा की और सेवा भी गुरु ने ही करवाई। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

आपे संगत सद बहाले आपे विदा करावे

वह अपने आप ही बुलाता है, आप ही ताने में है और आप ही बाने में है। सिक्ख में भी वह आप है और गुरु में भी आप है। अध्यापक और स्टूडेंट में यह फर्क है कि अध्यापक की विद्या जागी हुई है और स्टूडेंट उस

विद्या को जगाने के लिए अध्यापक की सोहबत करता है। जब स्टूडेंट की विद्या जाग जाती है तो दोनों एक जैसे हो जाते हैं। यही गुरु और शिष्य का फर्क है कि गुरु के अंदर वह प्रकट है और सेवक उसके चरणों में विद्या को प्रकट करने के लिए पहुँचा हुआ है।

निगुणिया नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ।।

कुछ प्रेमियों ने आपके आगे विनती की कि आपको इतनी ऊँची पदवी इसलिए मिली है क्योंकि आपने **सतगुरु की सेवा** की है। आपने उन प्रेमियों को जवाब दिया, ''मेरे अंदर तो कोई गुण नहीं था, न मैं इस काबिल था कि मैं सेवा कर सकता। वह खुद ही मुझे खींचकर गुरु अंगद की सेवा में लाया। बख्शने और बख्शवाने वाला भी वह आप ही था।''

आप भजन पढ़ते हैं कि मैं गुरु कृपाल की क्या सिफ़त करूँ जिसने कुल संसार बनाया है। आप कहेंगे कि एक बंदे ने संसार कैसे बना लिया? जिसने यह भजन लिखा है उसने बनाने वाला देखा है। भजन में आता है कि वह आप ही रस–रसायन तैयार करता है, आप ही चूर्ण बनाता है, आप ही काढ़े को गले से नीचे करता है। आप ही जमीन पर बेहोश करके सुला देता है और आप ही उठा लेता है।

सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ।।

जिंदगी में अमोलक पदार्थ, **सतगुरु की सेवा** किसी भाग्यशाली को ही मिलती है। उस सेवा का यह फल मिलता है कि हमारी आत्मा पर जन्मों–जन्मों से लगी मैलें धुलनी शुरु हो जाती हैं। हम गुरु की संगत में रहेंगे तो वह हमें नाम जपने के लिए कहेगा। हमारे ऊपर लगी हुई मैल कुछ सेवा करने से और कुछ गुरु के दर्शन करने से उतरती है, हमारी लिव कण–कण में बसे हुए राम के साथ लग जाती है। सबसे उत्तम पदार्थ **सतगुरु की सेवा** है जिससे हमारी लिव उस परमात्मा के साथ लग जाती है।

हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ।।

वह दरगाह में खुद ही बख्शता है तभी हमें सेवा का मौका मिलता है। स्वामी जी महाराज ने कहा था कि तन की सेवा, मन की सेवा, धन की सेवा जो भी हमें मिल जाए, हमें उससे फायदा उठाना चाहिए।

पर तेरा उपकार करावै, भूखे प्यासे को दिलवावे
उनकी मेहर मुफ्त तू पावे, जो उनको प्रसन्न करावे
गुरु नहीं भूखा तेरे धन का, उन पे धन है भक्ति नाम का

उसे उसके गुरु ने बहुत कुछ दिया होता है। वह संसार में दाता बनकर आता है। कबीर साहब कहते हैंः

पानी बाड़ो नाव में घर में बाड़ो दाम
दोनों हाथ उलिचिए यही स्यानों काम

अगर नाव में पानी भर जाए तो आप उस पानी को बाहर निकाल दें। घर में पैसा बढ़ जाए तो उस पैसे से गरीबों की मदद करें। भाग्यशाली जीव ही सेवा करते हैं। वह आप ही बख्शता है और आप ही उससे कहता है कि तुझे भी किसी ने ये पैसा दिया है तू इस पैसे से किसी की मदद कर दे। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान
गुरु बिन दान हराम है, जाए पुच्छो वेद पुरान

गुरु को पता है कि कौनसा प्रेमी भूखा है, किसे पैसे की जरूरत है? वह कई बार इशारा भी कर देता है कि तू इसकी मदद कर।

गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ।।

आप कहते हैं, ''हममें तो कोई गुण ही नहीं था, पता नहीं पिछले जन्मों में कितने अपराध किए थे, यह तो पूर्ण गुरु अंगददेव की कृपा हुई कि उन्होंने हमें अपने आपमें मिला लिया।''

नानक गुरु ते गुरु भए देखो तिसकी रजाए

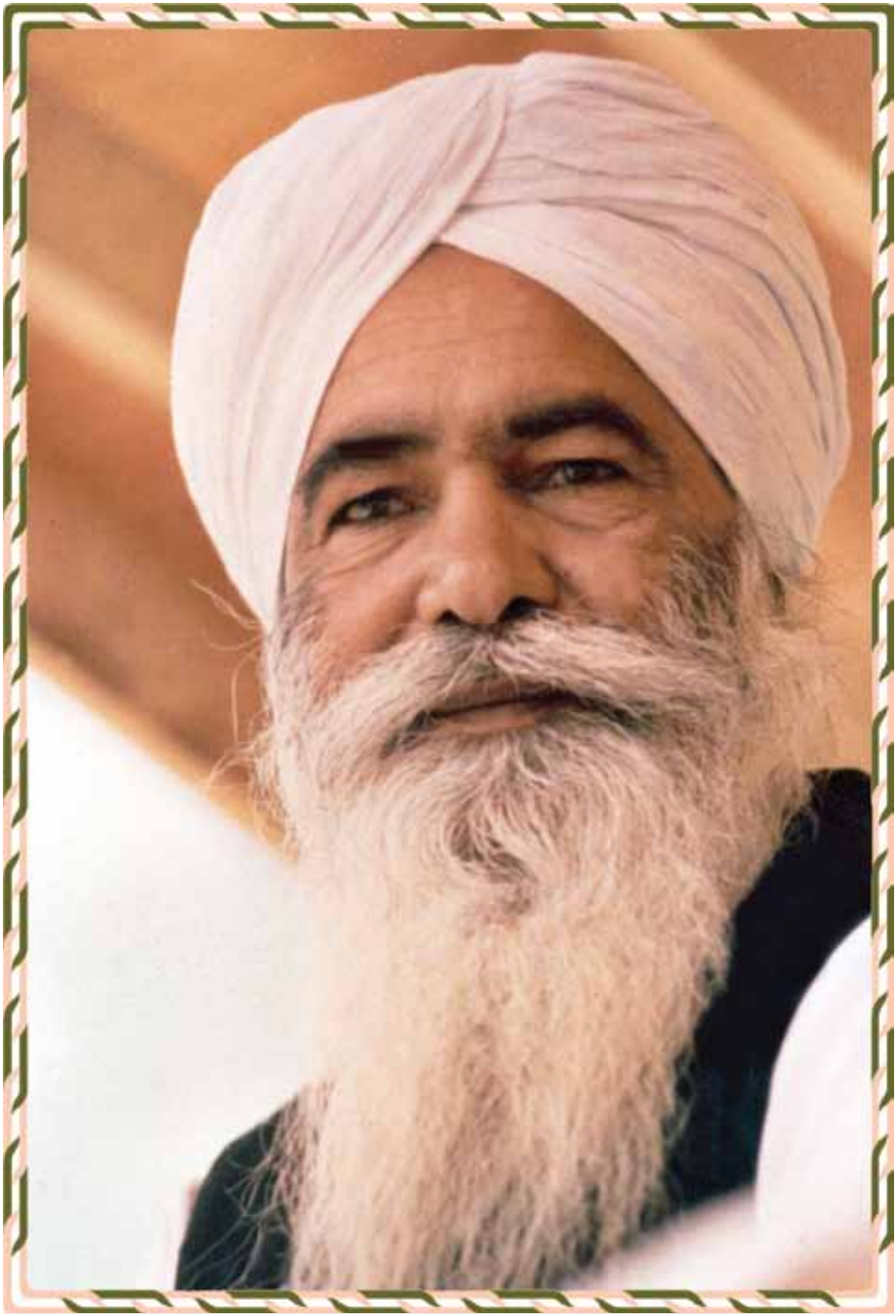

यह तो गुरु की दया–मेहर है कि उसने हमें अपने जैसा ही बना लिया। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गुण अवगुण मेरा कुछ न विचारयो, कंत पकड़ हौं कीन्ही रानी

गुरु ने मेरा गुण–अवगुण कुछ नहीं विचारा। वह कंत इतना दयालु हुआ कि उसने मुझे अपनी चारपाई पर बिठा लिया, जहाँ वह राजा था उसने मुझे रानी बना लिया। आत्मा पत्नी है और परमात्मा पति है, जब उसने अपने में मिला लिया तो पति–पत्नी का फर्क खत्म हो गया। आपमें इतनी नम्रता थी कि आप बहत्तर साल तक अपने बर्तन को साफ करते रहे और दस नाखुनों से मेहनत करके खाते रहे। मैं कहा करता हूँः

किसे काम के थे नहीं कोई न कौडी दे
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया ते भई अमोलक देह

अगर शिष्य में कोई गुण है तो वह गुरु ही है। भक्त नामदेव कहते हैंः

आठ दाम का छीपरो होयो लोकहीरा

मैं तो एक छीम्बा था, कोई मेरी आधी कौड़ी भी नहीं देता था। अब गुरु की कृपा से बहुत बड़े–बड़े पंडित, धनी लोग आकर मुझे माथा टेकते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

बुनना तुनना त्यागके प्रीत चरन कबीरा, नीच कुला जुलाहरा भयो गुणी गहीरा

कबीर साहब ने ताना बुना लेकिन पहल भजन को दी, बड़े गुणों वाले हो गए। राजा–महाराजाओं ने उन्हें अपनाया। गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''हम तो कुछ भी नहीं थे, बड़ाई तो गुरु की है।''

कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि।।

अब अंदर लिव लग गई है, शब्द रूप गुरु प्रकट हो गया है फिर पता चलता है कि गुरु तो उद्धार करते समय बड़े से बड़े अपराधी की तरफ भी ध्यान नहीं देता। गुरु अर्जुनदेव जी भी कहते हैंः

ऊँच अपार बेअन्त स्वामी कौण जाणे गुण तेरे
गावत उदरे सुणते वी उदरे बिनसे पाप घनेरे

पशु प्रेत मुग्ध को तारे पाहन पार उतारे
नानक दास तेरी शरणाई सदा सदा बलिहारे

तेरी महिमा कौन जान सकता है? सन्त जिस घोड़े–ऊँट की सवारी कर लें या जिस पेड़ का फल खा लें उसे भी इंसानी जामा मिलता है। भाई गुरदास ने भी कहा हैः

बेरी हेठ बैठे गुरु बेरी भी निहाल होई
अक्क ते अनार मरदाना तोड़ खांवदा

एक दिन गुरुनानक देव जी और मरदाना जा रहे थे। मरदाना को भूख लगी तब गुरु नानकदेव जी ने आक की तरफ इशारा करके उससे कहा, ''तू यह खा ले, ये आम हैं।'' मरदाना ने आक खाया तो आम की तरह जायका आया। मरदाना के दिल में ख्याल आया कि ये तो रोज ही रोही में फिरते हैं पता नहीं फिर कब खाना मिले? कुछ साथ बाँध लेते हैं। जब आगे जाकर मरदाना को भूख लगी, वह खाने लगा तो वह आक निकले।

साथ रहने वाले भी सन्त की महिमा को नहीं जान सकते, सन्त समझाएं तो ही वे समझ सकते हैं। मरदाना ने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''आप यह अच्छा खेल रचाते हैं, आपकी मर्जी हो तो मीठे कर देते हैं, आपकी मर्जी हो तो कड़वे कर देते हैं।'' गुरु नानकदेव जी ने मरदाना से कहा, ''यह तेरा लालच था। तूने आगे का फिक्र किया, जिस मालिक ने तुझे तब खाने के लिए दिया वह आगे भी देता।'' सन्त जिस पानी में पैर डाल दें वह खारा पानी भी मीठा हो जाता है। भाई गुरदास ने कहा थाः

पशु ते प्रेत दैत्य तारे मेरे सतगुरु ने
बन्दा क्यों न तरे जो शरण चल आवंदा

बड़े–बड़े पापियों का उद्धार हो जाता है अगर इंसान सच्चे दिल से आएगा तो उसका उद्धार कैसे नहीं होगा? महाराज कृपाल कहा करते थे, ''गुरु की शरण में आने से पहले जो कुछ कर लिया सो कर लिया, आगे के लिए तौबा कर लें कि अब हम पाप नहीं करेंगे।''

भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि।।

परमात्मा ने जिसका उद्धार करना होता है उसे गुरु की शरण में भेज देता है, गुरु उसे नाम के साथ जोड़ देते हैं। यह तरीका गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब या किसी इंसान का बनाया हुआ नहीं। परमात्मा ने नाम का बेड़ा सन्तों के हवाले किया हुआ है। जो लोग पक्के मन से उस बेड़े में सवार हो जाते हैं वे भवजल से पार हो जाते हैं, जो डाँवाडोल मन के साथ बेड़े को पकड़ते हैं वे यहीं गोते खाते रह जाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

दीनदयाल भरोसे तेरे सब परिवार चढ़ायो बेड़े
जे तिस भावे हुक्म मनावे इस बेड़े को पार लगावे

संगत ही सन्तों की फैमिली होती है। सारा परिवार उस दया करने वाले के भरोसे पर है। उसने वचन दिया होता है कि तू जिसे नाम देगा मैं उसकी संभाल करूंगा। हमने तेरे आसरे बेड़े को धक्का दे दिया है, आगे तेरी मौज है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''नाम जिम्मेवारी होती है, थ्योरी तो जगह–जगह पंडित, भाई कथा करके समझाते फिरते हैं।''

मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाड़ि।।

गुरु साहब कहते हैं कि हम तो लोहे की मैल की तरह भी नहीं थे। गुरु ने पारस बनकर सोना बना दिया, इसमें गुरु अंगददेव जी की बड़ाई है।

जन्म जन्म की इस मन को मैल लगी काला होया सुआओ
धोती खनली उजली न होवे चाहे सौ धोवन पाओ

कोल्हू को जिस कपड़े के टुकड़े के साथ साफ करते हैं उसे खनली, पोचा या डाट भी कह देते हैं। उसमें तेल जज्ब हुआ होता है उसे जितना मर्जी धो लें, उसकी मैल नहीं निकलती। हमारे मन की भी यही हालत है, इसे जन्मों–जन्मों की मैल लगी हुई है।

गुरु पारस है, बुजुर्गों से सुनते हैं कि पारस एक पत्थर होता है। पारस में यह गुण होता है अगर उसे लोहे के साथ लगा दें तो वह उस लोहे को

सोना बना देता है लेकिन पारस नहीं बना सकता। इंसान का जामा पारस है जिसकी हमें कद्र नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

पारस में और सन्त में बड़ा अंतरो जान
ओ लोहा कंचन कर ले ओ कर ले आप समान

एक महात्मा किसी साहूकार के घर गया, उस साहूकार को घाटा पड़ा हुआ था वह बहुत परेशान था। उस साहूकार ने महात्मा की सेवा की। महात्मा ने उससे कहा, ''मेरे पास एक पारस है, इसमें यह गुण है कि इसे लोहे से लगा दें तो लोहा सोना बन जाता है। मैं यह पारस तुझे तीन महीने के लिए देता हूँ, तीन महीने बाद मैं यह पारस वापिस ले जाऊँगा तब तक तू इससे खूब सोना बना लेना। साहूकार पारस को पाकर बहुत खुश हुआ।

साहूकार ने बाजार में जाकर दुकानदार से लोहे का भाव पूछा? दुकानदार ने कहा, ''देखो लाला जी, पहले भाव दस रूपये था अब पन्द्रह रूपये हो गया है।'' साहूकार ने कहा, ''मैं घाटेमंद सौदा नहीं करता जब दस रूपये होगा मैं तभी आकर ले जाऊँगा।'' थोड़े दिन बाद साहूकार ने फिर बाजार जाकर दुकानदार से लोहे का भाव पूछा? दुकानदार ने कहा, ''अब भाव अठारह रूपये हो गया है।'' साहूकार ने कहा जब भाव कम होगा मैं तभी खरीदूँगा। साहूकार को यह नहीं पता था कि लोहे को पारस लगाकर सोने की कीमत कितनी बढ़ जाएगी।

इतने में महात्मा का टाइम हो गया, महात्मा ने सोचा कि साहूकार ने बहुत अच्छे महल बना लिए होंगे, चलो चलकर अपना पारस वापिस ले आते हैं। महात्मा ने आकर देखा कि साहूकार की वही हालत थी। महात्मा देखकर बहुत हैरान हुआ और उसने कहा, ''मेरा पारस दे दे।'' महात्मा पारस लेकर वापिस चला गया।

यह एक मिसाल है, सच्चाई तो यह है कि हमारा जन्म पारस की तरह है जो हमें कुछ समय के लिए मिला है। अगर हम इस जन्म से फायदा

उठाएं, गुरु की शरण में चले जाएं और इसे नाम के साथ जोड़ दें तो हम सोना बन जाते हैं। वक्त पर आकर उसने हमसे पारस छीन लेना है।

आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ।।

आपने गुरु के चरणों में जाकर जो कुछ किया आप वह ब्यान करते हैं कि मैंने अपनी अक्ल और चतुराई छोड़ दी। मेरे गुरु ने मुझसे जो कहा मैंने वह किया। मेरी आत्मा परमात्मा में, परम ज्योत में जाकर मिल गई।

हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ।।

अब आप सवाल करने वालों से कहते हैं, ''मैंने आपको सब समझाकर बता दिया है कि मैं तो आधी कौड़ी का भी नहीं था। मैं अपने गुरु पर बलिहार जाता हूँ उसने मुझे इंसान बना दिया, परमात्मा बना दिया।''

नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ।।

मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ क्योंकि गुरु ने मुझे नाम का दान दिया है इसे आग जला नहीं सकती, चोर चुरा नहीं सकता, ठग ठग्गी नहीं मार सकता। नाम में सब खजाने आ जाते हैं, नाम अमोलक है मूल्य देने से नहीं मिलता। अगर नाम की कोई कीमत होती तो राजा–महाराजा इसे खरीद लेते। अगर खेतों में उगता तो जमींदार इसे उगा लेते। अगर व्यापार से मिलता तो साहूकार व्यापार में खरीद लेते। अगर भेष धारण करने से बस में आता होता तो बहरूपिए इसे फँसा लेते।

गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''ज्ञानी–ध्यानी लोग सारा दिन लोगों को कथा सुनाते हैं, रात–दिन कथा करते हैं, आप उन लोगों से पूछकर देखें, क्या उन्हें शान्ति आई, क्या उन्होंने अंदर कोई चिंगारी देखी? वे पढ़ने पर जोर देते हैं। आज तक गुरु के बगैर न कोई मालिक के दरबार में सहज अवस्था को प्राप्त हुआ है और न हो ही सकता है।''

सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइि।।

अब आप सवाल करने वालों से कहते हैं, ''प्यारेयो, अगर सेवा का मौका मिलता है तो **सतगुरु की सेवा** करें। घर में बैठकर रोजाना नाम जपें। सतसंग में जाने का मौका मिलता है तो टाईम निकालें। गुरु की याद में बैठना भी सेवा है, सतगुरु की सेवा ही मददगार होगी।''

गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु।।
प्रेम पदारथु पाईअै भाई सचु नामु आधारु।।
जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइि।।
जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइि।।

आप कहते हैं, ''मैं उन पर बलिहार जाता हूँ जो **सतगुरु की सेवा** करते हैं, अपने गुरु के गुण गाते हैं। सोते–जागते जिसके मुँह पर गुरु का नाम है उसका अपना तरना तो क्या मुश्किल है जो पीछे कुल में हुए हैं वह उन्हें भी तार लेता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंगी की कुल तर जाती है, जो अच्छी कमाई करते हैं उनकी कई कुलें तर जाती हैं। भक्ति का पदार्थ बयान नहीं किया जा सकता।''

सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइि।।

आप प्यार से कहते हैं, ''यह भी गुरु की कृपा से ही होता है। सच कभी नाश नहीं होता फनाह नहीं होता। जिसे वह तारना चाहता है उसे खुद ही अपनी भक्ति में लगा देता है।'' आज पश्चिम के अनेकों प्रेमी यहाँ बैठे हैं वे अगुवाही भरते हैं कि जिन्होंने बिल्ली रखी थी, जब बिल्ली का अंत समय आया तो हमने गुरु की मौजूदगी महसूस की। जिसने कुत्ता रखा था कुत्ते के अंत समय में भी उन्होंने यही कहा कि गुरु आया हमने महसूस

किया। गुरु सतसंगियों के कुत्तों की भी संभाल कर रहा है तो क्या उनके माता–पिता को नर्क में जाने देगा? भक्ति कोई छोटी नहीं।

गुरु की भक्ति करह क्या प्राणी ब्रह्मा इन्द्र महेश न जाणी

ब्रह्मा तरसता रह गया, विष्णु और महेश भी तड़पते रह गए क्योंकि उनकी और ही ड्यूटी लगा दी इसलिए गुरु भक्ति उनके हिस्से में नहीं आई। यह तो हम इंसानों के ऊँचे भाग्य हैं जिनके हिस्से गुरु भक्ति आ गई।

नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ।।

गुरु अमरदेव जी ने इस शब्द में सतगुरु से मिलने के फल बताए हैं। गुरु परमात्मा के उद्गम(सोमे) में से आता है, गुरु हमें नाम के जहाज में बिठाकर परमात्मा के उद्गम में ले जाता है। आखिर में आप यही कहते हैं कि जिनके दिल के अंदर नाम बस जाता है उन्हें कोई विघ्न नहीं लगता।

आमतौर पर हम लोग कहते हैं कि मंगलवार ठीक नहीं, बुधवार ठीक नहीं, कोई कहता है यह तिथि ठीक नहीं। हम सब लोग इन भ्रम–वहम में ही रहते हैं हाँलाकि न हमें अपना पता है, न कल का पता है कि क्या होना है? गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

सगन अपसगन तिसको लग्गे जिस प्रभ बिसरावे

जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते उन्हें शगुन–अपशगुन लगता है। जो भक्ति करते हैं जिन्होंने परमात्मा को मान लिया है उन्हें कोई विघ्न नहीं लगता। गुरु अमरदेव जी ने इस शब्द में कहा है कि हमें इंसानी जामें का मौका मिला है हम इस जामें में बैठकर भक्ति करें। जो कुछ सन्त सतगुरु बताते हैं उस पर प्यार से चलें, अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

03 मार्च 1982

***एक प्रेमी**: आपके पास आकर बहुत अच्छा लगता है, बहुत खुशी हो रही है। अगर आप नाराज न हों तो आप हमें बताएं कि हम किस तरह अपने आपको गुरु के हवाले कर सकते हैं?*

बाबा जी: मुझे भी आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई है, मैं अंदरूनी और बाहरी रूप से खुश हूँ लेकिन हम अपने आपको गुरु के हवाले तभी कर सकते हैं जब हम अपने आपको भूल जाएं और वे काम करने लग जाएं जिन कामों से गुरु राजी हो।

***एक प्रेमी**: सिमरन करने में सबसे बड़ी दिक्कत वाली बात यह है कि मन की ज़ुबान से सिमरन के पहले शब्द को जपने में बहुत दिक्कत होती है, उसका उच्चारण सही ढंग से नहीं होता। मैंने कई सतसंगियों से भी बात की है उनकी भी तकरीबन यही समस्या है। क्या इसकी कोई अंदरूनी वजह है या यह मेरे गलत उच्चारण की कमी से है?*

बाबा जी: हमारे अंदर गुरु के प्रति श्रद्धा और प्यार होना चाहिए उच्चारण अपने आप ही ठीक हो जाता है।

***एक प्रेमी**: कल रात को आपने कहा था कि महाराज कृपाल एक महान सन्त थे और उन्होंने कई पशुओं को भी तारा है। जब आपने यह कहा कि महाराज जी ने पशुओं को भी तारा है तो मेरे दिमाग में एक सवाल उठा, क्या वे पशुओं तो तारकर सच्चखंड ले गए?*

बाबा जी: जब तारने का सवाल आता है तो वह हर आत्मा को एक ही धाम सच्चखंड लेकर जाते हैं लेकिन जो पशु के जामें में होता है उसे इंसान के जामें में लाकर नामदान जरूर देते हैं, मुक्ति नाम में है। नाम

सच्चखंड में दाखिल होने का वीजा है। हो सकता है कोई इतनी हिम्मत करके आसमान के तारे गिन ले लेकिन गुरु के तारे कोई नहीं गिन सकता।

गुरु महान शक्ति है, वह तारने के लिए ही संसार में आता है। जिसका उसके साथ संपर्क पैदा हो जाता है या जो भोले भाव से उसके दर्शन कर लेता है, गुरु किसी पेड़ का फल खा ले, किसी ऊँट की सवारी कर ले तो गुरु उसे भी जरूर तारता है। हम मन के घाट पर बैठे हैं, हमारे और सतगुरु के दरम्यान मन ही दीवार है, जब हम इस दीवार को पार कर लेते हैं तब हमें पता चलता है कि गुरु किस तरह तारने के लिए आता है और कैसे तारता है फिर ही हमें यकीन आता है।

***एक प्रेमी**: आपने हमेशा ही यह कहा है कि गुरु ही हमें अपने पास बुलाता है, गुरु ही हमसे अभ्यास करवाता है तो ऐसी क्या बात है कि हम लोग अपना मुँह गुरु की तरफ से हटा लेते हैं, ऐसी क्या वजह है कि हम आपसे दूर चले जाते हैं?*

बाबा जी: भई, मैं रोज़ ही बताता हूँ कि सज्जन भी आपके अंदर है, दुश्मन भी आपके अंदर है। यह आपको फैसला करना है कि आपने सज्जन की बात माननी है या दुश्मन की बात माननी है। गुरु सज्जन है और दुश्मन मन है। दोनों ही आपको अंदर से प्रेरित करते रहते हैं, वकील की तरह समझाते रहते हैं। गुरु हमेशा ही आपको अंदर समझाता रहता है कि भजन के ये फायदे हैं, भक्ति के ये फायदे हैं और बुराई के ये नुकसान हैं। लेकिन मन यह कहता है कि गुरु के पास जाकर क्या लेना है, अभ्यास करके क्या लेना है, बहुत उम्र पड़ी है फिर कर लेंगे। आज नहीं तो कल अभ्यास कर लेंगे, ये दोनों ही संघर्ष आपके अंदर चलते रहते हैं। आप लेखा–जोखा करके देखें कि किस तरह आपके अंदर संघर्ष हो रहा है। आप हमेशा अपने दुश्मन मन की बात मानते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

तेरा सज्जन तुझमें दुश्मन भी तुझ माही।

गुरु देह नहीं होता, गुरु उसी वक्त विदेह भी है और देह भी है, वह शब्द रूप में सर्वव्यापी है। गुरु के लिए दूर और नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरु जब नाम देता है शब्द रूप होकर सेवक के साथ हो जाता है। गुरु सेवक को बड़े–बड़े खतरों की जानकारी देता है। सेवक, गुरु की बात सुनने के लिए तैयार नहीं होता लेकिन गुरु चेतावनी देता रहता है।

मेरा एक दोस्त केहर सिंह था, वह नामलेवा नहीं था। उसने हुजूर के दर्शन जरूर किए थे। वह सिक्ख समाज के कर्मकांड पर विश्वास रखता था। हुजूर ने एक दिन उसे सोते हुए चेतावनी दी, ''तू पंजाब मत जाना अगर वहाँ जाएगा तो बीमार हो जाएगा, तुझे तेरे रिश्तेदार उठाकर लाएंगे। तू बहुत जल्दी इस संसार से जाने वाला है अगर तू पंजाब जाने का विचार छोड़ दे तो हो सकता है कि कुछ समय के लिए तेरा कर्म कट जाए।'' उसने सुबह उठकर मुझे बताया कि रात को स्वपन में मुझे तेरा गुरु मिला, मेरा दिल बहुत खुश हुआ लेकिन मुझे बहुत पछतावा है कि मैं लोकलाज में रह गया, मैंने उनसे नाम नहीं लिया।

मैंने केहर सिंह को प्यार से बताया कि गुरु का स्वपन नहीं होता। जब कभी मन को शान्ति होती है, गुरु उस समय मौके की इंतजार में होता है कि मैं सेवक की आत्मा को कब साफ करूं। वह सेवक की आत्मा को ऊपर के मंडलों में खींच लेता है, साफ करता है। गुरु उस वक्त शिष्य को कुछ बताना चाहता है लेकिन अफसोस सेवक उसे स्वपन समझकर बैठ जाता है। जब हमारी आत्मा निचले चक्रों में गिर जाती है उस समय स्वपन आता है, दुनियावी स्वपनों में कोई खुशी नहीं होती। आपको नीचे के चक्रों में गुरु का स्वपन कभी नहीं आएगा। गुरु आत्मा को ऊपर खींचता है, जब आपको गुरु का स्वपन आएगा तब कई दिन तक आपका मन खुश रहेगा।

मैंने केहर सिंह को बहुत प्यार से ये सब बातें समझाई लेकिन मन बेएतबारा है, सब कुछ सुनकर समझकर सिर फेर देता है। यहाँ खूनीचक

से सूरतगढ़ बीस–पच्चीस मील है। केहर सिंह सूरतगढ़ गया, वहाँ जाकर उसका पंजाब जाने का मन बन गया और वह ट्रेन में बैठकर पंजाब चला गया। पंजाब फरीदकोट स्टेट पहुँचते ही वह बीमार हो गया। वहाँ उसकी बहन थी, उसकी बहन उसे डॉक्टर के पास ले जाने लगी तो उसने कहा, ''तू मुझे वापिस राजस्थान ही लेकर चल।''

राजस्थान वापिस आकर उसने मुझसे कहा, ''जो हुजूर ने मुझे स्वपन में कहा था वही बात हुई। मेरी आखिरी अरदास है कि अन्त समय तू मेरे पास रहना, मुझे कोई दवाई नहीं दिलवानी लेकिन मुझे यह पछतावा है कि मैंने ऐसे महापुरुष से नाम नहीं लिया।'' यह एक सच्चाई है कि हुजूर कृपाल ने अन्त समय में उसकी संभाल की। जब उसने चोला छोड़ा तो मैं उसके पास ही बैठा था, उसके दो लड़के और पत्नी थी। उसने खुशी–खुशी इस संसार को छोड़ा।

कहने का भाव इतना ही है कि गुरु सतसंगियों को तो चेतावनी देता ही है लेकिन वह बेसतसंगियों को भी चेतावनी दे जाता है, आगे कोई माने या न माने यह उसकी मर्जी है या उसे स्वपन समझकर छोड़ दे।

केहर सिंह का परिवार मेरे पास आता है। उसकी पुत्रवधू जंगीर कौर ने कई बार हुजूर कृपाल का फुल्का तैयार किया, हुजूर उससे अच्छा प्यार करते थे। एक बार जंगीर कौर ने कहा कि जब मेरे ससुर को चेतावनी मिल गई थी तो उसने क्यों नहीं मानी अगर मान लेता तो बच जाता। हुजूर ने कहा, ''हमारे मन बहुत बेएतबारे होते हैं ये हुक्म नहीं मानने देते, बाकी जो होनी है उसे टालना असंभव है। तेरी मौत ट्रेक्टर से गिरकर होगी, तू अपना ख्याल रखना।'' उस वक्त केहर सिंह परिवार के पास ट्रेक्टर नहीं था। उन्होंने ट्रेक्टर ले लिया, वे ट्रेक्टर लेकर मेरे पास आए कि आप इस पर दृष्टि डालें। मैंने जंगीर कौर को वह वक्त याद दिलवाया कि हुजूर का क्या हुक्म था? जंगीर कौर ने कहा, ''मैं ट्रेक्टर पर सवारी नहीं करूंगी।''

मैं जब पहले विश्व टूर पर सन्तबानी आश्रम अमेरिका गया, मेरे पास पत्र आया कि जंगीर कौर की मृत्यु अपने ही ट्रेक्टर से गिरकर हो गई है, मुझे अफसोस हुआ। सन्त ऐसी भविष्यवाणियाँ नहीं करते, कभी–कभी मौज में आकर किसी को चेतावनी भी दे देते हैं लेकिन हम दुनियादारों के मन उस कछुवे के सिर की तरह है जो कभी अंदर तो कभी बाहर होता रहता है। मन टिकता ही नहीं अगर मन टिके तो कहना माने और इसे ऐतबार आए।

***एक प्रेमी**: ऐसा क्यों है कि गुरु आंतरिक रूप में हमसे बहुत बातें करता है, हमें हमारे भविष्य की सारी बातें बताता है और अंदर हमें काफी डेमोंस्ट्रेशन देता है लेकिन बाहरी रूप में गुरु हमारी व्यक्तिगत जिंदगी के बारे में ज्यादा बात नहीं करता, कुछ मिनट ही बात करता है?*

बाबा जी: आपको पता है कि बाहरी तौर पर गुरु के पास इतना टाइम नहीं होता जितना हम चाहते हैं। आंतरिक रूप में वह आपका ही है चाहे आप उससे सारी रात बातें करते रहें, सवाल पूछते रहें। वह खुद भी नहीं सोता और वह आपकी आत्मा को जगाकर रखने का आशिक होता है। आप अंदर जाकर उससे जितनी मर्जी बातें करें, हमें बाहरी तौर पर इतना ख्याल नहीं करना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

जब तुम आवें आँख में आँख झाप मैं लूं
न मैं देखूं और को न तुझे देखन दूं

हमें भी ऐसी हालत पैदा कर लेनी चाहिए कि उसे आँखों में बसाकर आँखें बंद कर लें और उससे कहें न तू कहीं देख, न मैं कहीं देखूं।

***एक प्रेमी**: रोज अभ्यास करने से पहले आप कहते हैं कि मन को शान्त करें, किस तरह शान्त करें?*

बाबा जी: मैंने पहले दिन भी बताया था कि जिस तरह हम मकान में झाड़ू लगाकर कूड़े को बाहर निकाल देते हैं उसी तरह हमें दुनिया के

ख्यालों को निकालकर मन को खाली कर लेना चाहिए। जब दुनिया के ख्याल अंदर से निकल जाएंगे तो आपका मन शान्त हो जाएगा। जब आपने अपने मित्र से कोई बात करनी हो तो उस समय आप मन को अच्छी तरह शान्त करते हैं कि मेरी कोई पूछने वाली बात रह न जाए। उस समय आपकी सारी तवज्जो उस मित्र की तरफ होती है, आप अपने गुरु को ही अपना मित्र समझें कि मैं इस समय अपने पूर्ण परमात्मा के साथ बात करने के लिए बैठा हूँ। अगर आपके घर किसी सज्जन–मित्र ने आना हो तो आप किस तरह मकान को साफ करते हैं।

आप जिस समय अभ्यास के लिए बैठते हैं आपके दिल में तसल्ली होनी चाहिए कि मैंने इस समय परमात्मा के साथ बात करनी है। आपके पास आपका गुरु परमात्मा जरूर आता है अगर आपका मकान साफ नहीं तो वह किस तरह आपसे बात करेगा? अगर हम अपने ख्यालों को पवित्र करेंगे तो हमारा सिमरन सही तरीके से चलेगा। जब गुरु हमें साफ और पवित्र देखेगा तो वह बिना बुलाए ही हमारे पास आ जाएगा। हमें अपने आपको पवित्र बनाना चाहिए।

हुजूर महाराज कहा करते थे, ''भगवान इंसान की तलाश में है।'' इंसान वह है जिसके अंदर प्रभु जाग जाता है, जो अपनी आत्मा को मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर 'शब्द–नाम' के साथ जुड़ जाता है, शब्द–नाम को प्रकट कर लेता है। हम सब कहते हैं कि हम इंसान हैं लेकिन सन्तमत में जो आदमी विषय–विकारों में लिपटे हुए हैं उन्हें इंसान नहीं कहते। आप कबीर साहब की बानी पढ़कर देखें। आप कहते हैंः

पशु घड़ेंन्दा नर घड़ा चूक गया सींग पूँछ
अक्ल वही हैवान की बिना सींग बिन पूँछ

अगर भोग भोगने हों, दुनिया की तृष्णा में जागना हो तो हमारी नींद उड़ जाती है अगर नाम के लिए उठना है तो हम कितने बहाने लगाते हैं।

कभी कहते हैं कि दर्द होता है, कभी कहते हैं कि नींद आती है, कभी कहते हैं कि अब उठा नहीं जाता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बुरे काम को उठ खलोया नाम की बेला पै पै सोया

***एक प्रेमी**: जब शुरु में बच्चों को नाम दिया जाता है तो सिमरन से पहले धुन क्यों दी जाती है इसकी क्या वजह है?*

बाबा जी: वैसे भी बच्चों का ख्याल दुनिया में ज्यादा फैला हुआ नहीं होता, बच्चों का ख्याल टिका हुआ होता है इसलिए बच्चे धुन को जल्दी पकड़ लेते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''बच्चे भोली–भाली आत्माएं होते हैं, विषय–विकारों में लिपटे हुए नहीं होते, उनके ख्याल बिल्कुल शुद्ध होते हैं। कई बार माता–पिता ने गुरु को प्रकट नहीं किया होता लेकिन बच्चे गुरु को प्रकट करके गुरु से आम बातें कर लेते हैं।''

***एक प्रेमी**: जब आप कहते हैं कि हमें अपने ख्याल पवित्र रखने चाहिए तो इसका क्या मतलब है? क्या दुनियादारी के ख्याल नहीं होने चाहिए या गंदे ख्याल नहीं होने चाहिए?*

बाबा जी: दुनियादारी का कोई भी ख्याल पवित्र नहीं होता, वह आपको दुनिया में फँसाएगा। आप एक मिनट के लिए कोई व्यापार या पढ़ाई का ख्याल सोचेंगे उसके बाद मन वहाँ नहीं ठहरेगा। फिर यह मन धीरे–धीरे विषय–विकारों के ख्याल भी पैदा करेगा। जब मन अपना ग्रंथ खोल लेता है तो यह न दिन में खत्म होता है और न रात में खत्म होता है। सारी जिंदगी लग जाती है लेकिन यह ग्रंथ खत्म होने में नहीं आता। हम जो कुछ दिन में सोचते हैं,रात को सोते हुए उसी के स्वपन आने लग जाते हैं।

मेरी माता का एक धर्म भाई बना हुआ था, वह अच्छी भक्ति भाव वाला था। उस समय मैं बच्चा था, मुझे पता नहीं था कि यह भक्ति करता है। वह रात को लैम्प जलाकर बैठ जाता और सारी रात जागते हुए ही बिताता था। उसने अपने पास एक तीखा सूआ रखा हुआ था, जब कोई

ख्याल आता तो कहता, ''तू आ गया है फिर दूसरा ख्याल आता तो कहता तू आ गया है।'' वह सारी रात ऐसे ही करता रहता और ख्याल से कहता देख! मेरे पास तीखा सूआ है मैं यह तेरी दाढ़ो में चुभो दूँगा।

जब वह सुबह उठकर चाय पीता तो हम उसके कंधे पर चढ़ते और उससे कहते, ''मामा! सूआ तेरी दाढ़ो में चुभोएं।'' वह कहता जब तुम्हें संघर्ष करना पड़ेगा तब तुम्हें पता लगेगा। हो सकता है कि तुम मुझसे भी बड़ा सूआ बनाओ। कोई दूसरा आदमी रात को उसके मकान की तरफ आकर देखता तो उन्हें लगता कि पता नहीं यह कितने आदमियों से बात करता है लेकिन वहाँ कोई आदमी नहीं होता था। वह अकेला ही सोता था सिर्फ ख्याल ही होते थे, जिन्हें वह कहता था कि तू आ गया है, तू आ गया है। दूसरा आदमी यह कहता कि पता नहीं इसके पास भूत–प्रेत आते हैं। मैं आपको वायदे से कहता हूँ अगर आप मन को डरा–धमका कर शब्द में लगाए रखेंगे तो आप जरूर कामयाब होंगे।

***एक प्रेमी**: धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि सन्त जानी जान होते हैं, उन्हें सब पता होता है लेकिन मैंने बाहरी रूप से देखा है कि जब सन्तों को कोई बात बताएं तो वे कहते हैं कि मुझे इस बात का पता नहीं था या ये बातें मैं आज ही सुन रहा हूँ। ऐसा क्यों है, बाहरी रूप में वे ऐसा क्यों बोलते हैं?*

बाबा जी: वे तो ठीक बोलते हैं। कई प्रेमी ऐसे भी होते हैं जो कहते हैं कि ये अब हमें टाल रहे हैं। यह दुनिया दम मारने की नहीं। सन्त–महात्मा हमेशा ही संसार में भोले–भाले बनकर अपनी जिंदगी व्यतीत करते हैं। मैंने रात को पप्पू के पिता की टेप सुनी जो उसने कनाडा से भेजी है। उस टेप में पप्पू के पिता ने इसी बात पर जोर दिया है कि आप कहते हैं कि सन्त चमत्कार नहीं दिखाते। वह कहता है, ''सन्त चमत्कार के बगैर और कोई बात ही नहीं करते।'' जिन प्रेमियों को भरोसा हो जाता है उनका भरोसा टूटना मुश्किल है।

सन्त अपने आपको यह नहीं कहते कि हम कुछ हैं बल्कि वे दूसरे प्रेमी को मान देते हैं कि तू बहुत स्याना है, तू बहुत कुछ जानता है।

मैंने देखा है अगर किसी ने मेरे गुरुदेव के आगे खड़े होकर उनकी तारीफ की कि आपने इस तरह बताया तो वे कहते, ''हाँ हाँ! तू औलिया हुआ।'' कहने का भाव सन्त अपनी बड़ाई सुनकर भी खुश नहीं होते। मैं जब 77 आर.बी. में था तब यहाँ (16 पी.एस. में) ताला लगा हुआ था। जब मैंने हुजूर कृपाल से इस जगह के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, ''जिस कमरे में महाराज सावन सिंह जी रहते थे, मैं उस कमरे को हमेशा ही लॉक रखता था। कभी–कभी खास मौके पर प्रेमियों को उस कमरे के दर्शन करवाए जाते थे।''

यहाँ पर कई बार हुजूर कृपाल के पवित्र, मुबारक, नूरी और दुनियावी चरण पड़े हैं। यह वह जगह है जहाँ पर हुजूर ने तीसरे दिन फट्टे से उठाकर मालिश करके मेरी सुरत नीचे उतारी थी। इस जगह हुजूर कृपाल ने मेरे नेत्र संसार की तरफ से बंद करके अपनी तरफ खोले थे। उन दिनों मैं आमतौर पर किसी से नहीं मिलता था। खास क्रियाओं के लिए ही बाहर निकलता था। यह थोड़ी सी जगह उस वक्त की बनी हुई है, यह छोटी सी जगह लंगर की है, पानी का छोटा सा टेंक है, यहाँ एक सेवादार रहता था। बाकी का आश्रम अभी नया ही बना है।

मैं आशा करता हूँ कि आप यहाँ से यही शिक्षा लेकर जाएंगे कि भजन–अभ्यास करना क्यों जरूरी है? जिसने भी भजन–अभ्यास किया है, परमात्मा उसकी मेहनत नहीं रखता। आपको पता होना चाहिए कि सन्त जी ने कितनी मेहनत की, किस तरह रातें जागे। हम भी यहाँ से यह प्रेरणा लेकर जाएंगे। परमात्मा सतगुरु हर एक के लिए दरवाजा खोलता है।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

आप जिस समय अभ्यास के लिए बैठते हैं आपके दिल में तसल्ली होनी चाहिए कि मैंने इस समय परमात्मा के साथ बात करनी है। आपके पास आपका गुरु परमात्मा जरूर आता है अगर आपका मकान साफ नहीं तो वह किस तरह आपसे बात करेगा? अगर हम अपने ख्यालों को पवित्र करेंगे तो हमारा सिमरन सही तरीके से चलेगा। जब गुरु हमें साफ और पवित्र देखेगा तो वह बिना बुलाए ही हमारे पास आ जाएगा। हमें अपने आपको पवित्र बनाना चाहिए।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज